

विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – षष्ठ

दिनांक -05- 10-2020

विषय -हिन्दी

विषय शिक्षक -पंकज कुमार

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज पाठ -10 शक्ति और क्षमा के कवि रामधारी सिंह दिनकर जी के बारे में अध्ययन करेंगे।

नाम – रामधारी सिंह दिनकर

जन्म – सन् 1908 सिमरिया (बिहार)

विवाह – मनरूप देवी

कार्यक्षेत्र- गद्य एवं पद्य दोनों ही विधाओं
में कार्य.

रचनाएं- अर्द्धनारीश्वर, रेती के फूल,
उजली आग
संस्कृति के चार अध्याय,
भारत संस्कृति की एकता, हुँकार

मृत्यु- सन् 1974

पुरस्कार- पद्मभूषण (1959)
भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार(1972)

रामधारी सिंह दिनकर का जन्म सन् 1908 नें बिहारके मुंगेर जिले के सिमरिया-घाट नामक ग्राम में एक साधारण किसान परिवार में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री रवि सिंह तथा माता का नाम श्रीमती मनरूप देवी था । दिनकर ने मोकामा-घाट से मैट्रिक एं पटना विश्वविद्यालय से बी .ए. (ऑनर्स) की शिक्षा पूर्ण की थी । पारिवारिक परिस्थितियों के कारण इच्छा रहने के बाज भी ये आगे नहीं पढ़ सके। दिनकर जी ने बाल्यावस्था में भी अपनी साहित्य-सृजन की प्रतिभा का परिचय दिया था । मिडिल कक्षा में अध्ययनरत् होते हुए, इन्होंने वीरबाला नामक काव्य रचना की तथा मैट्रिक में पढ़ते समय इनका प्राणभंग काव्य प्रकाशित हो गया था ।

वर्ष 1928-29 में उन्होंने साहित्य सृजन के क्षेत्र में विधिवत् कदम रखा । बी.ए. की परीक्षा पास करने के उपरान्त इन्होंने मोकामा -घाट के हाईस्कूल में प्रधानाध्यापक का कार्य भार सँभाला । सन् 1934 में इन्होंने बिहार के सरकारी विभाग में सब- रजिस्ट्रार की नौकरी की तथा सन् 1934 में ही ब्रिटिश सरकार के युद्ध प्रचार विभाग में उपनिदेशक नियुक्त किए गए । कुछ समय पश्चात् सन् 1950 में ये मुजफ्फरपुर कॉलेज में हिन्दी विभाग के अध्याक्ष नियुक्त किए गए । सन् 1952 में भारत के राष्ट्रपति ने इन्हें राज्यसभा का सदस्य मनोनीत किया, जहाँ ये सन् 1962 तक रहे । कुछ समय तक ये भागलपुर विश्वविद्यालय के कुलपति भी रहे । इसके पश्चात् भारत सरकार के गृहविभाग में हिन्दी सलाहकार के रूप नें वे एक लम्बे अर्से तक हिन्दी के सम्वर्द्धन के लिए कार्यरत् रहे।

लिखकर याद करें।